HIN3A 16a

अमीर खुसरौ : हिन्दी रचनाएँ

१-१ पहेलियाँ : अंतर्लापिका

बाला था जब सबको भाया ।
बढ़ा हुआ कुछ काम न आया ॥
खुसरो कह दिया उसका नाँव ।
अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव ॥ - दीया

श्याम बरन और दाँत अनेक ।
लचकत जैसे नारी ॥
दोनों हाथ से खुसरो खींचे ।
और कहे तू आरी ॥ - आरी

एक नार करतार बनाई ।
ना वह क्वारी ना वह ब्याही ॥
सूहा रंगहि वाको रहै ।
भाबी भाबी हर कोई कहै ॥ - बीरबहूटी

सावन भादों बहुत चलत है, माघ पूस में थोरी ।
अमीर खुसरौ यों कहे तू बूझ पहेली मोरी ॥ - मोरी

गोल मटोल और छोटा मोटा ।
हर दम वह तो ज़मीं पर लोटा ॥
खुसरो कहे नहीं है झूठा ।
जो न बूझे अक़िल का खोटा ॥ - लोटा

एक मन्दिर के सहस्र दर ।
हर दर में तिरिया का घर ॥
बीच बीच वाके अमृत ताल ।
बूझ है इसकी बड़ी महाल ॥ - शहद का छत्ता

बीसों का सिर काट लिया ।
ना मारा ना खून किया ॥ - नाखून

१-२ पहेलियाँ : बहिर्लापिका

है वह नारी सुन्दर नार ।
नार नहीं पर वह है नार ॥
दूर से सब को छबि दिखलावे ।
हाथ किसी के कभू न आवे ॥ - बिजली

एक थाल मोती से भरा ।
सबके सिर पर औंधा धरा ॥
चारों ओर वह थाली फिरे ।
मोती उससे एक न गिरे ॥ - आसमान

अरथ तो उसका बूझेगा ।
मुँह देखो तो सूझेगा ॥ - आईना

एक नार ने अचरज किया ।
साँप मार पिंजरे में दिया ॥
ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाए ।
ताल सूखे औ साँप मर जाए ॥ - दीये की बत्ती

एक गुनी ने यह गुन कीना ।
हरियल पिंजरे में दे दीना ॥
देखो जादूगर का हाल ।
डाले हरा निकाले लाल ॥ - पान

२ - मुकरियाँ

सारी रैन मोरे संग जागा ।
भोर भए तब बिछुड़न लागा ।
वाके बिछुड़न फाटे हियाँ ।
ऐ सखी साजन ना सखी दिया ॥

पड़ी थी मैं अचानक चढ़ आयो ।
जब उतरयो तो पसीनो आयो ।
सहम गई नहिं सकी पुकार ।
ऐ सखी साजन ना सखी बुख़ार ॥

आँख चलावे भौं मटकावे ।
नाच-कूद के खेल दिखावे ।
मन में आवे ले जाऊँ अन्दर ।
ऐ सखी साजन ना सखी बन्दर ॥

वा बिन मोको चैन न आवे ।
वह मेरी तिस आन बुझावे ।
है वह सब गुन बारहबानी ।
ऐ सखी साजन ना सखी पानी ॥

नंगे पाँव फिरत नहिं देत ।
पाँव से मिट्टी लगन नहिं देत ।
पाँव का चूमा लेत निपूता ।
ऐ सखी साजन ना सखी जूता ॥

ऊँची अटारी पलंग बिछायो ।
मैं सोई मेरे सिर पर आयो ।
खुल गई अखियाँ भई अनन्द ।
ऐ सखी साजन ना सखी चन्द ॥

बैसाख में मेरे ढिग आवत ।
मोको नंगी सेज पर डारत ।
न सोवे न सोवन देत अधरमी ।
ऐ सखी साजन ना सखी गरमी ॥

आठ पहर मेरे ढिग रहे ।
मीठी प्यारी बातें कहे ।
स्याम बरन और राती नैना ।
ऐ सखी साजन ना सखी मैना ॥

सरब सलोना सब गुन नीका ।
वा बिन सब जग लागे फीका ।
वाके सिर पर होवे को न ।
ऐ सखी साजन ना सखी नोन ॥

३ - निस्बतें

बादशाह और मुर्ग़ में क्या निस्बत है ? - ताज
आदमी और गेहूँ में क्या निस्बत है ? - बाल

४ - दो सखुन

४-१ हिन्दी-हिन्दी

पंडित क्यों न नहाया ?
धोबिन क्यों मारी गई ? - धोती न थी ।

घर क्यों अँधियारा ?
फ़कीर क्यों बिगड़ा ? - दिया न था ।

अनार क्यों न चखा ?
वज़ीर क्यों न रखा ? - दाना न था ।

राजा प्यासा क्यों ?
गधा उदासा क्यों ? - लोटा न था ।

४-२ फ़ारसी-हिन्दी

दर जहन्नुम चीस्त ?
कामी को क्या चाहिए ? - नार

कोह चे मी दारद ?
मुसाफ़िर को क्या चाहिए ? - संग

तिश्न: रा चे मी बायद ?
मिलाप को क्या चाहिए ? - चाह

दर आईना चे मी बीनंद ?
दुखिया को क्या न कहिए ? - रू/रो

५ - ढकोसले

खीर पकाई जतन से और चरख दिया जलाय
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय । ला पानी पिला ।

६ - गीत

बहुत रही बाबुल घर दुलहिन, चल, तेरे पी ने बुलाई ।
बहुत खेल खेली सखियन सों, अंत करी लरिकाई ॥
न्हाय धोय के बस्तर पहिरे, सब ही सिंगार बनाई ।
बिदा करन को कुटुँब सब आये, सिगरे लोग-लुगाई ॥
चार कहारन डोली उठाई, संग पुरोहित नाई ।
चले ही बनेगी होत कहा है, नैनन नीर बहाई ॥
अन्त विदा ह्वै चलिहै दुलहिन, काहू की कछु ना बसाई ।
मौज-खुसी सब देखत रह गए, मात-पिता औ भाई ॥
मोरि कौन सँग लगन धराई, धन-धन तेरि है खुदाई ।
बिन माँगे मेरी मँगनी जो दीन्हीं, पर घर की जो ठहराई ॥
अँगुरी पकरि मोरा पहुँचा भी पकरे, कँगना अँगुठी पहिराई ।
नौशा के संग मोहि कर दीन्हीं, लाज-संकोच मिटाई ॥
सोना भी दीन्हा, रूपा भी दीन्हा, बाबुल दिल दरियाई ।
गहेल गहेला डोलति आंगन में, पकरि अचानक बैठाई ॥
बैठत महीन कपरे पहनाये, केसर तिलक लगाई ।
खुसरो चली ससुरारी सजनी, संग नहीं कोई जाई ॥

निज़ाम तोरी सूरत पै बलिहारी ।
सब सखियन में चुन्दर मेरी मैली
देख हँसे नर नारी
अब के बहार चूँदर मोरी रंग दे,
निज़ाम पिया रख ले लाज हमारी ॥
निज़ाम तोरी सूरत पै बलिहारी
सदक़ा बाबा गंज सकर का
रख ले लाज लाज हमारी
मेरे घर निज़ाम पिया
निज़ाम तोरी सूरत की बलिहारी
कुतुब फ़रीद मिलि आए बराती
खुसरो राजदुलारी
निज़ाम पिया रख ले लाज हमारी ॥

७ - फ़ारसी-हिन्दी मिश्रित छन्द

ज़े हाल-ए-मिसकीं मकुन तग़ाफुल
दुराय नैना बनाय बतियां
कि ताब-ए हिजराँ न दारम् ऐ जाँ
न लेहु काहे लगाय छतियाँ
शबान-ए-हिजराँ दराज़ चूँ ज़ुल्फ़्-ओ
रोज़-ए-वसलत चूँ उम्र कोताह
सखी पिया को जो मैं न देखूँ
तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ
यकायक अज़ दिल दो चश्म जादू
ब सद फ़रेबाम बबुर्द तसकीं
किसे पड़ी है जो जा सुनावे
पियारे पी को हमारी बतियाँ
चु शमअ सोज़ाँ चु ज़र्रा हैराँ
ज़े मेह्र-ए-आँ माह बगश्तम् आख़िर
न नींद नैनाँ न अंग चैना
न आप आवें न भेजें पतियाँ
ब हक़्क़-ए-रोज़-ए-विसाल-ए-दिलबर
कि दाद मा रा फ़रेब खुसरो
सो पीत मन की दुराय राखौं
जो जान पाऊँ पिया की घतियाँ ॥

८ - सूफ़ी दोहे

गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस ॥

खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग ।
तन मेरो मन पीउ को दोउ भए एक रंग ॥

सेज सूनी देख के रोऊँ दिन-रैन ।
पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चैन ॥

पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव ।
मुज जलती जनम गई तेरे लेखन बाव ॥